मूलाङ्का: ३४९ + २३१ **प्रज्ञापना (उपांग) सूत्रस्य विषयानुक्रम - १** दीप-अनुक्रमा: ६२२

मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:	मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:	मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:
००१	पद ०१- प्रज्ञापना	०१३	---	पद ०३- बहुवक्तव्यता (वर्तते)	-----	३५३	पद ०७- उच्छ्वास:	
१९२	पद ०२- स्थानं	१५४	---	--द्वार् २०- संज्ञी	२८८	३५४	पद ०८- संज्ञा	
२५७	पद ०३- बहुवक्तव्यता	२३८	---	--द्वार् २१- भवसिद्धिक:	२८८	३५६	पद ०९- योनि:	
---	--द्वार् ०१- दिशा	२३९	---	--द्वार् २२- अस्तिकाय:	२९१	३६१	पद १०- चरिम:	
---	--द्वार् ०२- गतिः	२५०	---	--द्वार् २३- चरम:	२९७			
---	--द्वार् ०३- इन्द्रियं	२५२	---	--द्वार् २४- जीव:	२९८	३७५	पद ११- भाषा	
---	--द्वार् ०४- काय:	२५६	---	--द्वार् २५- क्षेत्रं	२९९	४००	पद १२- शरीरं	
---	--द्वार् ०५- योग:	२७९	---	--द्वार् २६- बन्धं	३२२	४०५	पद १३- परिणाम:	
---	--द्वार् ०६- वेद:	२८०	---	--द्वार् २७- पुद्गल, दिशा-	३२६	४१३	पद १४- कषाय:	
---	--द्वार् ०७- कषाय:	२८१		आदि अल्पबहुत्वं	-----			
---	--द्वार् ०८- लेश्या	२८१				४१९	पद १५- इन्द्रियं	
---	--द्वार् ०९- द्रष्टि:	२८४	२९८	पद ०४- स्थितिः	३४८	---	--उद्देशक: ०१- नामादि	
---	--द्वार् १०- ज्ञानं	२८५	३०७	पद ०५- विशेषं	३६९	---	--उद्देशक: ०२- उपचयादि	
---	--द्वार् ११- अज्ञानं	२८५	३२६	पद ०६- व्युत्क्रान्ति:		४३८	पद १६- प्रयोग:	
---	--द्वार् १२- दर्शनं	२८६	---	--द्वार् ०१- द्वादश:				
---	--द्वार् १३- संयत:	२८६	---	--द्वार् ०२- चतुर्विंशति:		४४२	पद १७- लेश्या	
---	--द्वार् १४- उपयोग:	२८६	---	--द्वार् ०३- सांतरं		---	--उद्देशक: ०१- समाहारादि	
---	--द्वार् १५- आहारक:	२८६	---	--द्वार् ०४- एकसमयं		---	--उद्देशक: ०२- षड्भेदा:	
---	--द्वार् १६- भाषक:	२८८	---	--द्वार् ०५- आगति:		---	--उद्देशक: ०३- उपपातादि	
---	--द्वार् १७- परित्त:	२८८	---	--द्वार् ०६- उद्वर्तना/गति:		---	--उद्देशक: ०४- परिणामादि	
---	--द्वार् १८- पर्याप्त:	२८८	---	--द्वार् ०७- परभवायु:		---	--उद्देशक: ०५- वर्णादि	
---	--द्वार् १९- सूक्ष्मं	२८८	---	--द्वार् ०८- आकर्ष:/आयुबंध:		---	--उद्देशक: ०६- मनुष्यापेक्षया	

मूलाङ्का: ३४९ + २३१ — **प्रज्ञापना (उपांग) सूत्रस्य विषयानुक्रम - २** — दीप-अनुक्रमा: ६२२

मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:		मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:		मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:
४७१	पद १८- कायस्थिति:			---	पद १८- बहुवक्तव्यता (वर्तते)			---	पद २८-आहार/उद्देशक:२-वर्तते	
---	--द्वार् ०१- जीव:			---	--द्वार् २१- अस्तिकाय:			---	--द्वार् ०२- भवसिद्धिकत्वं	
---	--द्वार् ०२- गति:			----	--द्वार् २२- चरिम:			---	--द्वार् ०३- संज्ञी	
---	--द्वार् ०३- इन्द्रियं							---	--द्वार् ०४- लेश्या	
---	--द्वार् ०४- काय:			४९५	पद १९- सम्यकत्वं			---	--द्वार् ०५- द्रष्टि:	
---	--द्वार् ०५- योग:			४९६	पद २०- अंतक्रिया			---	--द्वार् ०६- संयत:	
---	--द्वार् ०६- वेदं			५०९	पद २१- अवगाहनासंस्थान/शरीर			---	--द्वार् ०७- कषाय:	
---	--द्वार् ०७- कषाय:			५२५	पद २२- क्रिया			---	--द्वार् ०८- ज्ञानं	
---	--द्वार् ०८- लेश्या							---	--द्वार् ०९- योग:	
---	--द्वार् ०९- सम्यकत्वं			५३४	पद २३- कर्मप्रकृत्ति:			---	--द्वार् १०- उपयोग:	
---	--द्वार् १०- ज्ञानं			---	--उद्देशक: ०१- अष्टविधा			---	--द्वार् ११- वेद:	
				----	--उद्देशक: ०२- भेद-प्रभेदा:			---	--द्वार् १२- शरीरं	
---	--द्वार् ११- दर्शनं							---	--द्वार् १३- पर्याप्ति:	
---	--द्वार् १२- संयत:			५४६	पद २४- कर्मबन्धं					
---	--द्वार् १३- उपयोग:			५४७	पद २५- कर्मवेदनं			५७२	पद २९- उपयोग:	
---	--द्वार् १४- आहार:			५४८	पद २६- कर्मवेदबन्धं			५७३	पद ३०- पश्यता	
---	--द्वार् १५- भाषक:			५४९	पद २७- कर्मवेदवेदनं			५७५	पद ३१- संज्ञी	
---	--द्वार् १६- परित:							५७७	पद ३२- संयत:	
---	--द्वार् १७- पर्याप्त:			५७०	पद २८- आहार:			५७९	पद ३३- अवधि:	
---	--द्वार् १८- सूक्ष्मं			---	--उद्देशक: ०१- सचित्तादि			५८४	पद ३४- प्रविचारणा	
---	--द्वार् १९- संज्ञी			---	--उद्देशक: ०२-			५९५	पद ३५- वेदना	
---	--द्वार् २०- भवसिद्धिक:			---	--द्वार् ०१- आहारकत्वं			५९९-६२२	पद ३६- समुद्घात:	

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[१५],उपांगसूत्र-[४] “प्रज्ञापना” मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्ति: